

अहल्या स्तुति

परसत पद्म पावन सोक नसावन प्रगट लई तपपुंज सही ।
द्वेषत रघुनायक जन सुभद्रायक सनमुभ छोई कर जोरि रही ॥
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुभ नहिं आवई अचन कही ।
अतिसय अडभागी चरनन्हिे लागीं जूगल नयन जलधार अही ॥
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहूँ थीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई ।
अति निर्मल आनी अस्तुति ठानी आनगम्य जय रघुराई ।
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुभद्राई ॥
राजव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई ।
मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ॥
द्वेषेईं लरि लोचन हरि भव मोचन ईहईं लाभ संकर जाना ।
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथन मागईं अर आना ॥
पद्म कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ।
जेहिं पद्म सुरसरिता परम पुनिता प्रगट लई सिव सीस धरी ॥
सोई पद्म पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेई कृपाल हरी ।
ओहि भाँति सिधारी गौतम नारी आर आर हरि चरन परी ।
जो अति मन भावा सो अरु पावा गै पति लोक अनंद भरी ॥
अस प्रभु दीनअंधे हरि कारनरहित दयाल ।
तुलसीदास सह तेहि भजु छाडि कपट जंजाल ॥